हिन्दी–आलोचना

विषय	हिन्दी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	P1 हिन्दी–आलोचना
इकाई सं. एवं शीर्षक	M3 मार्क्सवाद
इकाई टैग	HINDI – P1 M3 (VI SEM.HONS.) CC13
प्रधान निरीक्षक	डॉ० कुसुम राय
प्रश्नपत्र –संयोजक	डॉ० पूनम शर्मा
इकाई –लेखक	डॉ० पूनम शर्मा
इकाई– समीक्षक	डॉ० कुसुम राय
भाषा – सम्पादक	डॉ० पूनम शर्मा

पाठ का प्रारूपः

इकाई 1: पाठ का उद्देश्य

इकाई 2: प्रस्तावना

इकाई 3: मार्क्सवाद क्या है?

इकाई 4: मार्क्सवाद का उदय

इकाई 5: मार्क्सवादी–सिद्धांत

इकाई 6: निष्कर्ष

पाठ का उद्देश्य –:

इस इकाई में आप कार्ल मार्क्स तथा अन्य द्वारा प्रतिपादित मार्क्सवाद के सिद्धांत और व्यवहार के बारे में जान पाएँगे। दर्शन के बुनियादी तत्त्वों, द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग–संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद की विस्तार से चर्चा की गई है।

- ❖ समाजवाद के पूर्व मार्क्सवाद के सूत्र, जैसे कि काल्पनिक समाजवाद की चर्चा कर पाएँगे।
- ❖ मार्क्सवाद के बुनियादी परिकल्पनाओं का आकलन, वर्णन तथा चर्चा कर सकेंगे।
- ❖ मार्क्सवादी सिद्धांत के दूसरे प्रमुख अंगों जैसे अलगाव और स्वतंत्रता के सिद्धांत की विवेचना कर पाएँगे।
- ❖ मार्क्सवाद की समीक्षा और इसकी समकालीन प्रासंगिकता की विवेचना कर पाएँगे।

प्रस्तावना :–

मार्क्सवाद एक अत्यन्त चर्चित, राजनीतिक और सारगर्भित सिद्धांत जिसकी रचना मार्क्स और एंजल्स दोनों ने मिलकर की है। वास्तव में मार्क्स और एंजल्स दोनों के संयुक्त विचारों ने मिलकर ही पूरे मार्क्सवाद की सृष्टि की है। मार्क्स विलक्षण प्रतिभा के इन्सान थे। वैज्ञानिक समाजवाद के मूल सिद्धांतों के निरूपण मे उनकी देन ऐंजल्स की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण थी। इसलिए वैज्ञानिक समाजवाद को मार्क्सवाद भी कहा जाता है। सैद्धांतिक क्षेत्र में मार्क्स के योगदान को कबूल करते हुए ऐंजल्स ने लिखा था – ''जो कुछ मैने किया है वह मार्क्स मेरी सहायता के बिना भी कर सकते थे परंतु जो कुछ मार्क्स ने किया वह मेरे लिए संभव नहीं था। उसकी प्रतिभा उच्च कोटि की थी। अक्सर वह अधिक दूरदर्शी था। हम लोगो की अपेक्षा उसकी दृष्टि अधिक व्यापक और तीव्र थी। उसके बिना यह सिद्धांत अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकता था। अतः सिद्धांतों पर उसके नाम की छाप होना सर्वथा उचित है।''1 मार्क्सवाद पहला दर्शन है जिसने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, तथा इतिहास का आर्थिक विकास प्रस्तुत करके आध्यात्मवादी मान्यताओं को ठेस पहुँचाई। 'वर्ग संघर्ष' तथा 'अतिरिक्त मूल्य' के सिद्धांत द्वारा पूंजीवादी समाज के प्रभुत्व पर विशेष रूप से जोर दिया। मार्क्सवाद पहला दर्शन है, जिसने सर्वहारा वर्ग के प्रभुत्व को स्थापित करने के लिए एक व्यावहारिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अतः स्पष्ट है कि मार्क्स के विचारों को ही मार्क्सवाद कहा जाता है।

मार्क्सवाद क्या है?:– कार्लमार्क्स और एंजिल्स दोनों द्वारा दर्शन, राजनीतिशात्र, समाजशास्त्र, विज्ञान, अर्थशास्त्र इत्यादि विषयों पर प्रस्तुत विचारों का समूह मार्क्सवाद कहलाता है।

डॉ० अमरनाथ के अनुसार – ''मार्क्सवाद दार्शनिक ,राजनीतिक, आर्थिक, और सामाजिक विचारों की एक पद्धति है, जिसके प्रस्तोता कार्लमाक्स (Kal Marx, 1818-1883) और फ्रेडरिक ऐंजल्स है और जिसे सोवियत संघ के क्रांतिकारी नेता के जननेता माओत्सो तुंग ने व्यावहारिक रूप से विकसित और समृद्ध किया।''

मार्क्सवाद का उदय– मार्क्सवाद का उदय 19 वीं शताब्दी के मध्य हुआ। कार्लमार्क्स ने अर्थ–व्यवस्था की दृष्टि से विषमता रहित और शोषण रहित समाज–व्यवस्था के लिए मार्क्सवादी–सिद्धांत का प्रतिपादन किया और इसी से मार्क्सवाद का शुभारंभ हुआ। मार्क्स ने 1844 ई० में वैज्ञानिक समाजवाद (Scientific Socialism) का प्रतिपादन किया। मार्क्स का दर्शन व्यावहारिक था। उसमें साम्यवादी घोषणा–पत्र में मजदूरों का आह्वान करते हुए कहा – 'विश्व के महान मजदूरों एक हो जाओ'। ''मार्क्सवाद के महान नेता लेनिन ने, सर्वप्रथम मार्क्सवाद को व्यवहार में सफलतापूर्वक प्रयुक्त किया और आधार पर 1917 में रूस में क्रांति करके मार्क्सवाद राज–व्यवस्था कायम की।

मार्क्सवादी–सिद्धांत–:

मार्क्सवाद को दो भागों में बॉटा गया है–

1. **चिरसम्मत मार्क्सवाद**
2. **समकालीन मार्क्सवाद**

जो मान्यताएँ स्वयं मार्क्स और एंगेल्स के विचारों पर आधारित है, उन्हें 'चिरसम्मत मार्क्सवाद' कहा जाता है तथा मानवीय पक्ष पर आधारित मार्क्सवाद 'समकालीन मार्क्सवाद' कहलाता है। इसका उद्देश्य उत्पादन प्रणाली में पूँजीवाद की जगह समाजवाद लाना नहीं बल्कि बेबस मनुष्यों को सच्ची स्वतंत्रता दिलाना भी है।

चिरसम्मत मार्क्सवाद के सिद्धान्तों को निम्नांकित चार भागों में विभक्त किया गया है–

1. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
2. ऐतिहासिक भौतिकवाद
3. वर्ग–संघर्ष का सिद्धांत
4. अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत

1. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद – मार्क्स ने इसे एक सर्वांगीण जीवन–दर्शन माना है। मार्क्सवादी सिद्धांत का मूल उत्स है। भौतिक जगत् की सभी वस्तुएँ और घटनाएँ अपने आभ्यान्तरिक विरोध और संघर्ष के कारण द्वन्द्ववादी प्रक्रिया के आधार पर अनवरत रूप से परिवर्तनगामी एवं विकासोन्मुख रहती है। परिवर्तन सैदव गुणात्मक होता है और ये परिवर्तन आकस्मिक होते है तथा ये अंतर्द्वन्द्वपूर्ण प्रक्रिया से होते है जिनमें निषेध का निषेध होता रहता है।

2. ऐतिहासिक भौतिकवाद – किसी भी युग में समाज के आर्थिक संबंध समाज की प्रगति का रास्ता तैयार करने तथा राजनीतिक, कानूनी, सामाजिक, बौद्धिक और नैतिक संबंधों का

स्वरूप निर्धारित करने में से है। (उत्पादन–शक्ति और वितरण–प्रणाली) में बदलाव से समाज के स्वरूप में भी बदलाव आता है। मार्क्स ने हीगल की भॉति माना है कि विकास की प्रक्रिया तीन अवस्थाओं – वाद, प्रतिवाद, और संवाद– से गुजरती है और 'परमसत्य' तक चलती है।

3. वर्ग–संघर्ष का सिद्धांत – मार्क्स का मानना है कि समाज का अब तक का इतिहास वर्ग–संघर्ष का इतिहास है। सत्ता सदैव प्रभुत्वशाली वर्ग के हाथों में रही है। उत्पीड़न का साधन मात्र रहा है। मार्क्स की यह मान्यता है कि यह वर्ग–संघर्ष तब तक जारी रहेगा, जब तक मजदूर समाज की बागडोर नहीं संभालते। मजदूर को पूंजीवाद का अंत करने के लिए क्रांति हेतु ललकारा। मार्क्स का विचार था कि क्रांति से ही शोषक–वर्ग का अस्तित्व समाप्त होगा और वर्गहीन,राज्यहीन साम्यवादी समाज की स्थापना होगी, जिसमें समाज विवशता लोक से परिकल्पना की और यह कहा कि इसमें सत्ता किसी वर्ग–विशेष के हाथ में न हो कर श्रमिक वर्ग के हाथों में होगी तो प्रत्येक व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार कार्य करेगा तथा कार्य के अनुसार मूल्य प्राप्त होगा।

4. अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत – अतिरिक्त मूल्य से तात्पर्य उस मूल्य से है, जो श्रमिक के श्रम का परिणाम है, किन्तु उसे पूंजपति हड़प लेता है। मार्क्स ने इसे 'चोरी' कहा है। मार्क्स का कहना था कि समाजवादी व्यवस्था में मजदूरों को उनके श्रम का उचित मूल्य मिलेगा और विकास कार्यों हेतु उत्पादित मूल्य का जो हिस्सा पृथक रख जायेगा अतिरिक्त मूल्य नहीं कहलायेगा क्योंकि उसका लाभ स्वंय मजदूर का होगा।

साहित्यिक मार्क्सवाद – कार्लमार्क्स ने न सिर्फ राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शन, विज्ञान, अर्थशास्त्र, मानवतावादी चिंतन, अलगाव की संकल्पना, स्वतंत्रता के दर्शन पर अपनी मान्यताऍ प्रतिपादित की बल्कि सामाजिक–जीवन के साथ महत्वपूर्ण संबंध रखने वाले साहित्य के विषय में भी महत्वपूर्ण विचार एवं अनेक मान्यताऍ प्रतिपादित की, जिन्हें मार्क्सवादी साहित्य– विचार कहा जाता है।

<u>डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने इसे निम्न बिन्दुओं में प्रस्तुत किया है–</u>

1. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ही मार्क्सवाद साहित्य है।
2. 'कला के लिए' दृष्टि का विरोध ।
3. समाज का यथार्थवादी चित्रण ही इनके विचार है।
4. 'द्वन्द्व–सिद्धान्त' को मानते हुए उन्होंने परिवर्तन–प्रक्रिया को मान्यता दी है।
5. वर्ग–संघर्ष को तीव्र करने का आह्वान किया।

6. सामाजिक वैषम्य की समाप्ति तथा वर्ग–विहीन समाज की स्थापना ही इनका लक्ष्य है।
7. लोक–रूचि, लोक–स्वभाव, लोक–जीवन के महत्व को स्थापित किया और जनवादी काव्य परम्परा को अपनाने का आग्रह।
8. मार्क्सवादी विचारधारा के आदर्श–मूल्य ही एकमात्र आदर्श–मूल्य है।
9. चिन्तकों में काडवेल, फाक्स, फेरेल तथा जार्ज लुकाच की दृष्टि बड़ी व्यापक है तथा इन्होंने अत्यन्त वैज्ञानिकता से सामाजिक यथार्थवाद का सम्पूर्ण परम्परा से विवेचन करते हुए अपनी सैद्धान्तिक मान्यताओं को प्रतिष्ठा दी।
10. मार्क्सवादी सामाजिक यथार्थ अपने साथ यथार्थवाद रोमांसवाद अपनाता हे।
11. क्लासिक–काव्य परम्परा को आदर देते हुए उन्होंने अपनी दृष्टि का विस्तार किया है।
12. यह मात्र प्रचारात्मक ही नहीं, इनमें सामाजिक क्रान्ति, रूढ़ियों से विद्रोह, परम्परा में परिष्कार तथा श्रेष्ठ साहित्य है।
13. जीवन के प्रति यह कला सर्वथा वैज्ञानिक दृष्टि रखती है। सैद्धान्तिक मान्यताएँ गहरी आस्था को जन्म देती है।
14. द्रव्य ही सभी विषमताओं का आधार है।
15. कला में इनकी दृष्टि से बाह्य ही नहीं अन्तर्मन का भी चित्रण होना चाहिए।
16. पूर्णतः भौतिकवाद पर आधरित होने के कारण इनका धर्म, ईश्वर, आत्मा तथा दर्शन में विश्वास नहीं है।
17. इनके चिन्तन के केन्द्र में है मानव, उसी की मुक्ति का उपाय है।
18. पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, आर्दशवाद,व्यक्तिवाद, अभिव्यंजनावाद, सौन्दर्यवाद, विम्बवाद आदि प्रतिक्रियावादी तत्वों का अन्त करते हुए वैज्ञानिक समाजवाद की स्थापना ही इनका लक्ष्य रहा है।
19. प्रतिक्रियावादी तत्वों से वेष्ठित सभी प्रकार की राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक मान्यताओं का विरोध करते है।
20. मानव–विकास के सम्पूर्ण इतिहास को युगों, तथा वर्गों के आधार पर उनकी सही समझ पैदा करना।
21. कला तथा साहित्य अभिव्यक्ति का एक साधन मात्र है, जिसे सर्वहारा का अस्त्र बनना चाहिए तथा रूप की दृष्टि से बोधगम्यता भी उसे आत्मसात करनी चाहिए।
22. जो सिद्धान्त कला तथा साहित्य के क्षेत्र में प्रतिक्रियावादी शक्तियों, प्रवृतियों और व्थवस्था का विरोधी है,वही प्रगतिवादी साहित्य है।
23. समानाधिकार, स्वतन्त्रता, मानवीय गरीमा हो सकते है।
24. जनजीवन में होने वाले परिवर्तन को कला और साहित्य शब्द तथा रूप देने के साथ–साथ एक गति, संघर्ष पैदा करे।
25. साहित्य, साहित्यकार की वैयक्तित्क चेतना न होकर समाज की सामूहिक चेतना है।

मार्क्सवाद का हिन्दी–साहित्य पर प्रभाव –

मार्क्सवाद का हिन्दी–साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुंशी प्रेमचंद ने प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन 1936 ई. की अध्यक्षता करते हुए लखनऊ ,में कहा था कि ''अब सौन्दर्य केवल सुन्दर गोरी स्त्री के लिपिस्टिक लगे होठों में ही नहीं देखना होगा बल्कि अपने बच्चे को खेत के मेड़ पर सुलाकर काम करने वाली युवती के पपड़ी पड़े होठों में भी देखना होगा।''

हिन्दी–आलोचना ने मार्क्सवादी मान्यताओं का आत्मसात कर हिन्दी–आलोचना के मार्ग को प्रशस्त किया। आलोचना के क्षेत्र में मार्क्सवादी आलोचना–पद्धति विकसित हुई। डॉ. रामविलास शर्मा (प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, प्रगति और परम्परा) डॉ.शिवदान सिंह चौहान (प्रगतिवाद, आलोचना के मान), रांगेय राघव (प्रगतिशील साहित्य के मानदंड), चंद्रबली पाण्डेय, अमृतराय (नयी समीक्षा), नामवर सिंह(कविता के नये प्रतिमान),मुक्तिबोध (नये साहित्य का सौन्दर्य–शास्त्र) इत्यिादि ने मार्क्सवाद आलोचना के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

मार्क्सवाद ने साहित्य की भाषा–शैली को भी प्रभवित किया। मार्क्सवाद के फलस्वरूप हिन्दी–साहित्य में ओज–प्रभाव से युक्त आह्वानात्मक भाषा–शैली, खंडन–मंडनात्मक भाषा–शैली, घात–प्रतिघातात्मक भाषा–शैली, प्रश्नोत्तरात्मक भाषा–शैली एवं व्यंगयात्मक भाषा–शैली का प्रचलन हुआ।

निष्कर्ष –

मार्क्सवाद एक जीवंत दर्शन है। मार्क्स के बाद इसे लेनिन, ट्रॉटस्की, स्टैलिन, रोज़ा लग्जंमबर्ग, ग्राम्सी, लुकास, ऐलथूज़ैर, माओ आदि विचारकों ने समृद्ध किया है। विचारधारा और इतिहास के अंत के प्रतिपादकों ने मार्क्सवाद के उल्लेख खत्म होने का किया है। लेकिन मार्क्सवाद सामाजिक विश्लेषण के एक आयाम और उत्पीड़ित वर्ग के दर्शन के रूप में प्रासंगिक रहेगा। यह जनमानस को उनकी मुक्ति के लिए संघर्ष हेतु प्रेरित करेगा। मार्क्सवाद एक क्रांतिकारी दर्शन है। यह एक सामाजिक परिवर्तन का दर्शन है। मार्क्स के शब्दों में, दार्शनिकों ने विश्व की व्याख्या का प्रयास किया है, पर सवाल है इसे बदलने का इसका उद्देश्य एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के शोषण से मुक्त समतावादी समाज की स्थापना

करना है। सिर्फ मार्क्सवाद के माध्यम से शायद मानवता आवश्यकता के क्षेत्र से स्वतन्त्रता के क्षेत्र तक बढेगी।